

International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

भारतीय दर्शन की परम्परा: बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन का सैद्धान्तिक एवं साहित्यिक विश्लेषण

Anuranjan Raj

Research Scholar, Department of Philosophy, Amaltas University, Dewas

Dr. Ram Asare Prasad

Supervisor, Department of Philosophy, Amaltas University, Dewas

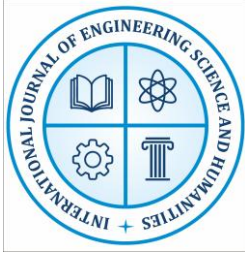
सार

भारतीय दर्शन विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध दार्शनिक परम्पराओं में से एक है, जिसने मानव जीवन, ज्ञान, सत्य, आत्मा, ब्रह्म, नैतिकता तथा मोक्ष जैसे मूलभूत प्रश्नों पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया है। भारतीय दार्शनिक परम्परा में बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन दो ऐसे प्रमुख विचार-प्रवाह हैं, जिन्होंने भारतीय एवं वैश्विक बौद्धिक परम्परा को गहराई से प्रभावित किया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारतीय दर्शन की परम्परा के संदर्भ में बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन के सैद्धान्तिक आधारों का विश्लेषण तथा उपलब्ध साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन करना है। यह शोध पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें प्राचीन दार्शनिक ग्रंथों, उपनिषदों, वेदान्त साहित्य, त्रिपिटक, शोध-पत्रों, पुस्तकों तथा प्रतिष्ठित विद्वानों के प्रकाशित अध्ययनों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जहाँ बौद्ध दर्शन अनित्य, अनात्म, प्रतीत्यसमुत्पाद तथा मध्यम मार्ग के सिद्धान्तों के माध्यम से दुःख-निवारण एवं निर्वाण की अवधारणा प्रस्तुत करता है, वहीं वेदान्त दर्शन ब्रह्म, आत्मा, अद्वैत, मोक्ष एवं परम सत्य के सिद्धान्तों के आधार पर आध्यात्मिक एकत्व एवं आत्मसाक्षात्कार का प्रतिपादन करता है। दोनों दर्शन अपने-अपने दृष्टिकोण में भिन्न होने के बावजूद नैतिक जीवन, आत्मानुशासन, करुणा, ज्ञान तथा मानव कल्याण को समान रूप से महत्व प्रदान करते हैं। साहित्य समीक्षा से यह भी ज्ञात होता है कि आधुनिक युग में बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन केवल धार्मिक या आध्यात्मिक विमर्श तक सीमित नहीं हैं, बल्कि शिक्षा, मनोविज्ञान, नैतिक दर्शन, पर्यावरणीय चिंतन, वैश्विक शांति तथा मानवीय मूल्यों के विकास में भी इनकी प्रासंगिकता निरंतर बढ़ रही है। निष्कर्षतः यह अध्ययन प्रतिपादित करता है कि भारतीय दार्शनिक परम्परा में बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन के सैद्धान्तिक आधारों का समन्वित अध्ययन भारतीय ज्ञान परम्परा की व्यापकता, गहनता तथा समकालीन उपयोगिता को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द: भारतीय दर्शन, बौद्ध दर्शन, वेदान्त दर्शन, सैद्धान्तिक आधार, साहित्य समीक्षा।

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान-परम्पराओं में से एक है, जिसने मानव जीवन, सृष्टि, आत्मा, परम सत्य, ज्ञान, नैतिकता तथा मोक्ष जैसे गूढ़ विषयों पर व्यापक एवं तर्कसंगत विचार प्रस्तुत किए



International Journal of Engineering, Science and Humanities

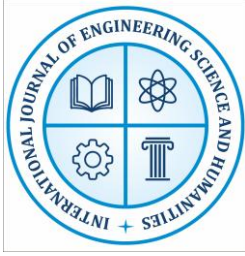
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

हैं। भारतीय दार्शनिक परम्परा का विकास वैदिक काल से प्रारम्भ होकर उपनिषदों, महाकाव्यों तथा विविध दार्शनिक सम्प्रदायों के माध्यम से निरन्तर होता रहा है। इस परम्परा में आस्तिक एवं नास्तिक दोनों प्रकार की विचारधाराओं का समावेश है, जिनमें सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदान्त आस्तिक दर्शन के प्रमुख अंग हैं, जबकि बौद्ध, जैन एवं चार्वाक दर्शन नास्तिक परम्परा का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन सभी दार्शनिक प्रणालियों का मूल उद्देश्य मानव जीवन के अंतिम सत्य की खोज, दुःखों से मुक्ति तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन के आदर्शों की स्थापना रहा है। भारतीय दर्शन की विशेषता इसकी सहिष्णुता, तार्किकता, बहुलतावाद तथा संवाद की परम्परा है, जिसने विभिन्न मतों एवं विचारधाराओं को समान रूप से विकसित होने का अवसर प्रदान किया। परिणामस्वरूप भारतीय दर्शन केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं रहा, बल्कि जीवन-दर्शन, सामाजिक व्यवस्था, शिक्षा, नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक विकास का भी आधार बना।

भारतीय दार्शनिक परम्परा में बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन दो अत्यंत प्रभावशाली एवं व्यापक विचारधाराएँ हैं, जिन्होंने भारतीय ही नहीं, अपितु वैश्विक बौद्धिक परम्परा को भी गहराई से प्रभावित किया है। बौद्ध दर्शन, जिसकी स्थापना महात्मा बुद्ध द्वारा की गई, अनित्य, अनात्म, प्रतीत्यसमुत्पाद, मध्यम मार्ग तथा चार आर्य सत्यों के आधार पर दुःख-निवारण एवं निर्वाण का मार्ग प्रस्तुत करता है। इसके विपरीत वेदान्त दर्शन उपनिषदों, ब्रह्मसूत्र एवं भगवद्गीता पर आधारित होकर ब्रह्म, आत्मा, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत एवं द्वैत जैसे सिद्धान्तों के माध्यम से परम सत्य एवं मोक्ष की व्याख्या करता है। यद्यपि दोनों दर्शनों के दार्शनिक आधार, आत्मा एवं परम सत्ता के संबंध में भिन्न दृष्टिकोण हैं, तथापि दोनों का लक्ष्य मानव जीवन को उच्च नैतिकता, आत्मानुशासन, ज्ञान एवं आध्यात्मिक उत्कर्ष की ओर अग्रसर करना है। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मानसिक स्वास्थ्य, नैतिक संकट, सामाजिक असमानता तथा पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन के सिद्धान्त पुनः प्रासंगिक हो रहे हैं। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन भारतीय दर्शन की परम्परा के अंतर्गत बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन के सैद्धान्तिक आधारों तथा उपलब्ध साहित्य का विश्लेषणात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिससे इन दोनों दार्शनिक परम्पराओं की ऐतिहासिक, वैचारिक एवं समकालीन उपयोगिता का समग्र मूल्यांकन किया जा सके।

अध्ययन की आवश्यकता

बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन पर पृथक्-पृथक् रूप से पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है, किन्तु दोनों परम्पराओं का ज्ञान, आत्मा एवं मुक्ति — इन तीनों केन्द्रीय अवधारणाओं को एक साथ जोड़कर किया गया व्यवस्थित तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत विरल है। अब तक हुए अधिकांश तुलनात्मक अध्ययन या तो साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से प्रभावित रहे हैं, जिनमें एक परम्परा को श्रेष्ठ और दूसरी को न्यून सिद्ध करने का आग्रह दिखाई देता है, या फिर वे पाश्चात्य दार्शनिक ढाँचे में भारतीय अवधारणाओं को ढालने का प्रयास करते हैं, जिससे मूल अवधारणाओं का स्वरूप विकृत हो जाता है। इसके अतिरिक्त, विगत दशक में अंग्रेजी भाषा में बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन पर विश्लेषणात्मक दर्शन, चेतना-अध्ययन एवं संज्ञानात्मक विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण



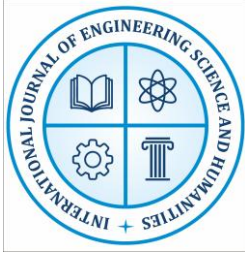
International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

शोध हुए हैं, किन्तु हिन्दी भाषा में इन नवीन शोधों को समाहित करता हुआ अद्यतन तुलनात्मक अध्ययन प्रायः अनुपलब्ध है। समकालीन विश्व में जब 'माइंडफुलनेस', ध्यान एवं आत्म-अन्वेषण की पद्धतियाँ वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय हो रही हैं, तब इन पद्धतियों के दार्शनिक आधारों — बौद्ध अनात्मवाद एवं वेदान्तिक आत्मवाद — का तात्त्विक अन्तर स्पष्ट करना आवश्यक हो गया है। साथ ही, शंकराचार्य पर लगे 'प्रच्छन्न बौद्ध' के आरोप, गौडपाद की माध्यमिक दर्शन से निकटता, तथा दोनों परम्पराओं के पारस्परिक प्रभाव जैसे प्रश्न आज भी विवादास्पद बने हुए हैं, जिनका निष्पक्ष परीक्षण अपेक्षित है। अन्तर-धार्मिक संवाद एवं सांस्कृतिक सद्भाव की दृष्टि से भी दोनों परम्पराओं के साम्य-वैषम्य का सम्यक् बोध आवश्यक है। इन्हीं शैक्षणिक, दार्शनिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-अध्ययन की योजना बनाई गई है, जो दोनों परम्पराओं का मूल स्रोतों के आधार पर वस्तुनिष्ठ तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत करेगा।

भारतीय दर्शन की परम्परा: एक परिचय

भारतीय दर्शन की परम्परा विश्व की प्राचीनतम, समृद्ध और बहुआयामी बौद्धिक परम्पराओं में से एक है, जिसका विकास मानव जीवन, जगत, ज्ञान, आत्मा, परम सत्य और मुक्ति से संबंधित मूलभूत प्रश्नों की खोज के साथ हुआ। भारतीय दर्शन का उद्देश्य केवल सैद्धान्तिक चिंतन या बौद्धिक जिज्ञासा की संतुष्टि नहीं रहा, बल्कि मनुष्य के दुःख, अज्ञान और सांसारिक बंधनों के कारणों को समझकर उनसे मुक्ति का व्यावहारिक मार्ग प्रस्तुत करना भी रहा है। इसकी प्रारंभिक अभिव्यक्ति वैदिक साहित्य में दिखाई देती है, जहाँ प्रकृति, देवत्व और विश्व-व्यवस्था से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया, जबकि उपनिषदों में यह चिंतन ब्रह्म, आत्मा, जगत और मोक्ष की गहन दार्शनिक खोज में परिवर्तित हुआ। भारतीय दर्शन को सामान्यतः आस्तिक और नास्तिक परम्पराओं में वर्गीकृत किया जाता है; यहाँ आस्तिकता का अर्थ मुख्यतः वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार करना है। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त को षड्दर्शन के रूप में आस्तिक परम्परा के अंतर्गत रखा जाता है, जबकि बौद्ध, जैन और चार्वाक दर्शन को वेद-प्रामाण्य स्वीकार न करने के कारण नास्तिक परम्पराओं में वर्गीकृत किया जाता है। इन सभी दर्शनों ने ज्ञान, वास्तविकता और मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य की अपनी विशिष्ट व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं। न्याय दर्शन ने तर्क और प्रमाण के माध्यम से यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति पर बल दिया, वैशेषिक ने पदार्थ और अस्तित्व की श्रेणियों का विश्लेषण किया, सांख्य ने पुरुष और प्रकृति के द्वैत के आधार पर जगत की व्याख्या की, योग ने चित्तवृत्तियों के निरोध और आध्यात्मिक अनुशासन को मुक्ति का मार्ग माना, मीमांसा ने वैदिक कर्म और धर्म को प्रमुखता दी तथा वेदान्त ने ब्रह्म, आत्मा और मोक्ष के प्रश्नों को अपने चिंतन का केंद्र बनाया। दूसरी ओर, बौद्ध दर्शन ने चार आर्य सत्य, प्रतीत्यसमुत्पाद, अनित्यता, अनात्मवाद और निर्वाण के माध्यम से मानव दुःख और उसके निरोध की व्याख्या की। जैन दर्शन ने अनेकान्तवाद, स्याद्वाद, अहिंसा और कर्म-सिद्धान्त को विशेष महत्त्व दिया, जबकि चार्वाक दर्शन ने प्रत्यक्ष अनुभव और भौतिकवादी दृष्टिकोण को प्राथमिकता प्रदान की। भारतीय दर्शन की विशेषता यह है कि इसमें वैचारिक मतभेदों के बावजूद ज्ञान और मुक्ति के बीच गहरा संबंध स्वीकार किया गया है। अधिकांश भारतीय दार्शनिक परम्पराएँ यह मानती हैं कि अज्ञान



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

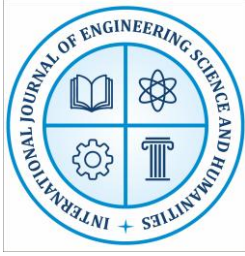
मनुष्य के बंधन और दुःख का महत्वपूर्ण कारण है तथा यथार्थ ज्ञान, नैतिक आचरण और आध्यात्मिक साधना के माध्यम से उच्चतर स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। इसी व्यापक दार्शनिक परम्परा में बौद्ध और वेदान्त दर्शन का विशेष स्थान है। बौद्ध दर्शन स्थायी आत्मा की अवधारणा को अस्वीकार करते हुए अनात्मवाद का प्रतिपादन करता है, जबकि वेदान्त आत्मा को नित्य चेतन सत्ता मानकर उसके ब्रह्म से संबंध की विभिन्न व्याख्याएँ प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार बौद्ध निर्वाण और वेदान्तीय मोक्ष मानव मुक्ति के दो विशिष्ट दार्शनिक प्रतिमान प्रस्तुत करते हैं। अतः भारतीय दर्शन की परम्परा को समझना बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन में ज्ञान, आत्मा और मुक्ति की अवधारणाओं के तुलनात्मक अध्ययन के लिए आवश्यक वैचारिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

भारतीय दर्शन का स्वरूप एवं विशेषताएँ

भारतीय दर्शन का स्वरूप मूलतः आध्यात्मिक, व्यावहारिक और जीवनोन्मुख है, जिसका प्रमुख उद्देश्य मानव जीवन के मूलभूत प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करना तथा व्यक्ति को दुःख और बंधन से मुक्ति की दिशा प्रदान करना है। भारतीय दार्शनिक चिंतन में ज्ञान को केवल बौद्धिक उपलब्धि न मानकर आत्मानुभूति और जीवन-परिवर्तन का साधन माना गया है। इसकी प्रमुख विशेषताओं में कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास, मोक्ष या निर्वाण को जीवन का परम लक्ष्य मानना, आत्मसंयम, नैतिक आचरण, ध्यान तथा सत्य की खोज को महत्त्व देना शामिल है। भारतीय दर्शन की एक अन्य विशेषता इसकी वैचारिक विविधता और सहिष्णुता है, जिसके अंतर्गत परस्पर विरोधी विचारधाराओं को भी तर्क और संवाद के माध्यम से विकसित होने का अवसर मिला। वेदान्त जहाँ आत्मा और ब्रह्म की परम सत्ता को स्वीकार करता है, वहीं बौद्ध दर्शन स्थायी आत्मा की धारणा का निषेध करता है। इन मतभेदों के बावजूद दोनों परम्पराएँ अज्ञान को बंधन का कारण और सम्यक् ज्ञान को मुक्ति का महत्वपूर्ण आधार मानती हैं।

आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन

भारतीय दार्शनिक परम्परा को सामान्यतः आस्तिक और नास्तिक दर्शनों में वर्गीकृत किया जाता है, जिसका मुख्य आधार ईश्वर में विश्वास नहीं, बल्कि वेदों की प्रामाणिकता की स्वीकृति अथवा अस्वीकृति है। वेदों को ज्ञान का प्रमाण मानने वाले दर्शनों को आस्तिक दर्शन कहा जाता है, जिनमें न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त प्रमुख हैं। इन छह दर्शनों को षड्दर्शन के नाम से भी जाना जाता है। इनमें ज्ञान, आत्मा, जगत, कर्म और मोक्ष के संबंध में अलग-अलग सिद्धान्त प्रस्तुत किए गए हैं। इसके विपरीत बौद्ध, जैन और चार्वाक दर्शन वेदों की सर्वोच्च प्रामाणिकता स्वीकार नहीं करते, इसलिए इन्हें नास्तिक दर्शन की श्रेणी में रखा जाता है। बौद्ध दर्शन अनात्मवाद, क्षणिकवाद और प्रतीत्यसमुत्पाद पर बल देता है, जबकि जैन दर्शन अनेकान्तवाद और जीव की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार करता है। चार्वाक दर्शन प्रत्यक्ष अनुभव को प्रमुख प्रमाण मानता है। इस प्रकार आस्तिक और नास्तिक दोनों परम्पराओं ने भारतीय दर्शन की तार्किक, आध्यात्मिक और बौद्धिक समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

बौद्ध दर्शन का उद्भव एवं विकास

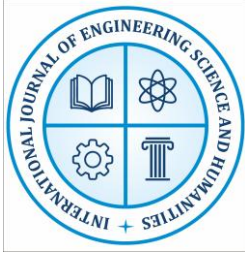
बौद्ध दर्शन का उद्भव छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारतीय सामाजिक, धार्मिक और दार्शनिक परिस्थितियों की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। इसके प्रवर्तक गौतम बुद्ध थे, जिन्होंने तत्कालीन वैदिक कर्मकांड, जटिल यज्ञ-परंपराओं और सामाजिक असमानताओं के स्थान पर नैतिक आचरण, करुणा, अहिंसा तथा आत्मानुशासन पर आधारित व्यावहारिक जीवन-दृष्टि प्रस्तुत की। बुद्ध ने मानव जीवन में व्याप्त दुःख को केंद्रीय समस्या मानते हुए चार आर्य सत्त्यों और अष्टांगिक मार्ग का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार दुःख का मूल कारण तृष्णा है और तृष्णा के निरोध द्वारा निर्वाण की प्राप्ति संभव है। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद उनकी शिक्षाओं को विभिन्न बौद्ध संगीतियों के माध्यम से व्यवस्थित और संरक्षित किया गया। कालांतर में बौद्ध दर्शन का विकास थेरवाद, महायान और वज्रयान जैसी प्रमुख परंपराओं के रूप में हुआ। महायान परंपरा में नागार्जुन के माध्यमिक दर्शन ने शून्यता के सिद्धांत को विकसित किया, जबकि असंग और वसुबन्धु से संबंधित योगाचार परंपरा ने विज्ञान तथा चेतना को विशेष महत्त्व दिया। भारत से बौद्ध दर्शन श्रीलंका, चीन, जापान, तिब्बत और दक्षिण-पूर्व एशिया तक विस्तृत हुआ। इस प्रकार बौद्ध दर्शन ने अनात्मवाद, प्रतीत्यसमुत्पाद, क्षणिकवाद, करुणा और निर्वाण जैसे सिद्धांतों के माध्यम से भारतीय तथा विश्व दर्शन को गहराई से प्रभावित किया।

गौतम बुद्ध एवं बौद्ध धर्म की पृष्ठभूमि

गौतम बुद्ध का जन्म लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व में लुम्बिनी में शाक्य कुल के राजपरिवार में सिद्धार्थ गौतम के रूप में हुआ। उस समय भारतीय समाज धार्मिक कर्मकांडों, यज्ञों, सामाजिक असमानता और वर्ण-व्यवस्था की जटिलताओं से प्रभावित था। सिद्धार्थ ने जीवन में वृद्धावस्था, रोग और मृत्यु जैसी वास्तविकताओं को देखकर मानव दुःख के कारणों को जानने का संकल्प लिया और राजसी जीवन का त्याग कर सत्य की खोज में निकल पड़े। कठोर तपस्या के बाद उन्होंने मध्यम मार्ग अपनाया और बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया, जिसके बाद वे 'बुद्ध' कहलाए। उन्होंने सारनाथ में अपना प्रथम उपदेश दिया और चार आर्य सत्य तथा अष्टांगिक मार्ग के माध्यम से दुःख से मुक्ति का व्यावहारिक मार्ग प्रस्तुत किया। उनका दर्शन कर्मकांड के बजाय नैतिकता, अनुभव, विवेक, करुणा, अहिंसा और आत्मानुशासन पर आधारित था। इसी वैचारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि में बौद्ध धर्म एक प्रभावशाली धार्मिक-दर्शनिक परंपरा के रूप में विकसित हुआ।

बौद्ध दर्शन का विकास

बौद्ध दर्शन का विकास गौतम बुद्ध की मूल शिक्षाओं से प्रारंभ होकर विभिन्न दार्शनिक संप्रदायों और परंपराओं के माध्यम से हुआ। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद उनकी शिक्षाओं को सुरक्षित और व्यवस्थित करने के लिए विभिन्न बौद्ध संगीतियों का आयोजन किया गया। प्रारंभिक बौद्ध दर्शन में चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद, अनात्मवाद, अनित्यता और निर्वाण को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ। समय के साथ बौद्ध संघ में वैचारिक मतभेद उत्पन्न हुए और अनेक संप्रदाय विकसित हुए। इनमें थेरवाद ने बुद्ध की



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

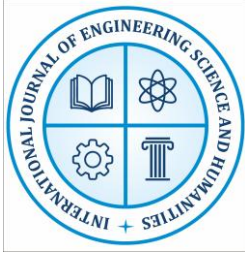
प्रारंभिक शिक्षाओं और व्यक्तिगत निर्वाण पर विशेष बल दिया, जबकि महायान ने बोधिसत्त्व आदर्श, करुणा और सभी प्राणियों की मुक्ति को महत्त्व प्रदान किया। आगे चलकर नागार्जुन ने माध्यमिक दर्शन के अंतर्गत शून्यवाद को विकसित किया तथा असंग और वसुबन्धु ने योगाचार या विज्ञानवाद को व्यवस्थित रूप दिया। बाद में वज्रयान परंपरा का भी विकास हुआ। इस प्रकार बौद्ध दर्शन ने निरंतर विकास करते हुए विविध दार्शनिक स्वरूप ग्रहण किए।

बौद्ध धर्म का प्रसार

बौद्ध धर्म का प्रसार गौतम बुद्ध के जीवनकाल में ही उनके उपदेशों और संघ की स्थापना के माध्यम से प्रारंभ हो गया था। बुद्ध तथा उनके शिष्यों ने विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण करके समानता, अहिंसा, करुणा और मध्यम मार्ग का संदेश जनसामान्य तक पहुँचाया। बौद्ध धर्म के व्यापक प्रसार में सम्राट अशोक का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया और उसके सिद्धांतों को अपने शासन तथा व्यक्तिगत जीवन में अपनाया। उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए धर्मदूतों को भारत के विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ श्रीलंका और अन्य देशों में भेजा। बाद के समय में व्यापारिक मार्गों, बौद्ध भिक्षुओं और विद्वानों के माध्यम से यह धर्म चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, म्यांमार, थाईलैंड तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक क्षेत्रों तक पहुँचा। विभिन्न देशों में स्थानीय संस्कृतियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए बौद्ध धर्म ने विविध रूप ग्रहण किए और एक विश्वव्यापी धार्मिक एवं दार्शनिक परंपरा के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

बौद्ध दर्शन की प्रमुख शाखाएँ

बौद्ध दर्शन का विकास समय के साथ विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं और संप्रदायों के रूप में हुआ, जिनमें प्रमुख रूप से थेरवाद, महायान और वज्रयान परंपराएँ उल्लेखनीय हैं। दार्शनिक दृष्टि से वैभाषिक, सौत्रान्तिक, माध्यमिक और योगाचार को भी बौद्ध दर्शन की प्रमुख विचारधाराओं के रूप में स्वीकार किया जाता है। थेरवाद परंपरा बुद्ध की प्रारंभिक शिक्षाओं, व्यक्तिगत साधना, नैतिक आचरण और निर्वाण की प्राप्ति पर विशेष बल देती है। महायान परंपरा में बोधिसत्त्व आदर्श, सार्वभौमिक करुणा और समस्त प्राणियों की मुक्ति को महत्त्व दिया गया। महायान के अंतर्गत नागार्जुन द्वारा विकसित माध्यमिक दर्शन ने शून्यता और प्रतीत्यसमुत्पाद को केंद्रीय सिद्धांत माना, जबकि असंग और वसुबन्धु से संबंधित योगाचार दर्शन ने विज्ञान अथवा चेतना की भूमिका पर विशेष बल दिया। वैभाषिक दर्शन बाह्य वस्तुओं की वास्तविक सत्ता को स्वीकार करता है, जबकि सौत्रान्तिक दर्शन बाह्य वस्तुओं का ज्ञान उनके मानसिक प्रतिनिधित्व के माध्यम से मानता है। आगे चलकर वज्रयान परंपरा में मंत्र, तंत्र, ध्यान और विशिष्ट साधना-पद्धतियों का विकास हुआ। इन विभिन्न शाखाओं में दार्शनिक मतभेद होने के बावजूद दुःख से मुक्ति, नैतिक जीवन, प्रज्ञा और निर्वाण की प्राप्ति उनका मूल उद्देश्य रहा है। इस प्रकार बौद्ध दर्शन की विविध शाखाएँ ज्ञान, आत्मा और मुक्ति संबंधी प्रश्नों की व्यापक दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत करती हैं।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

• हीनयान (थेरवाद)

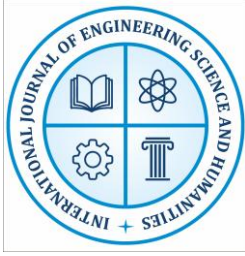
हीनयान, जिसे वर्तमान संदर्भ में अधिक उपयुक्त रूप से थेरवाद कहा जाता है, बौद्ध धर्म की प्राचीनतम जीवित परंपरा मानी जाती है। 'थेरवाद' का अर्थ 'स्थविरों की परंपरा' है और यह गौतम बुद्ध की प्रारंभिक शिक्षाओं के संरक्षण पर विशेष बल देती है। इसके धार्मिक एवं दार्शनिक सिद्धांत मुख्यतः पालि त्रिपिटक पर आधारित हैं। थेरवाद के अनुसार मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य व्यक्तिगत प्रयास, नैतिक आचरण, ध्यान और प्रज्ञा के माध्यम से निर्वाण प्राप्त करना है। इस परंपरा में 'अर्हत' को आदर्श माना गया है, जो तृष्णा, अज्ञान और आसक्ति का पूर्णतः नाश करके जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। थेरवाद अनित्यता, अनात्मवाद, प्रतीत्यसमुत्पाद और चार आर्य सत्यों को विशेष महत्त्व देता है। इसमें आत्मा जैसी किसी स्थायी सत्ता को स्वीकार नहीं किया जाता। वर्तमान समय में यह परंपरा मुख्यतः श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, लाओस और कंबोडिया में व्यापक रूप से प्रचलित है।

• महायान

महायान बौद्ध धर्म का एक व्यापक और प्रभावशाली रूप है, जिसका विकास लगभग पहली शताब्दी ईसा पूर्व से प्रारंभ माना जाता है। 'महायान' का अर्थ 'महान वाहन' है, जो केवल व्यक्तिगत मुक्ति के स्थान पर सभी प्राणियों की मुक्ति को अपना आदर्श मानता है। इस परंपरा में 'बोधिसत्त्व' की अवधारणा को केंद्रीय स्थान प्राप्त है। बोधिसत्त्व वह साधक है जो बुद्धत्व प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होते हुए करुणा से प्रेरित होकर अन्य प्राणियों को भी दुःख से मुक्त करने का प्रयास करता है। महायान दर्शन में प्रज्ञा और करुणा को साधना के दो प्रमुख आधार माना गया है। शून्यता, बोधिचित्त और बुद्ध-स्वभाव जैसी अवधारणाओं का भी इसमें विशेष महत्त्व है। महायान के अंतर्गत माध्यमिक और योगाचार जैसी महत्वपूर्ण दार्शनिक परंपराओं का विकास हुआ। इसने बौद्ध दर्शन को व्यापक दार्शनिक और आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान किया तथा चीन, जापान, कोरिया, वियतनाम और अन्य एशियाई क्षेत्रों में व्यापक प्रभाव स्थापित किया।

माध्यमिक एवं योगाचार

माध्यमिक और योगाचार महायान बौद्ध दर्शन की दो प्रमुख दार्शनिक परंपराएँ हैं। माध्यमिक दर्शन के प्रमुख आचार्य नागार्जुन माने जाते हैं, जिन्होंने 'शून्यता' के सिद्धांत की गहन व्याख्या की। इसके अनुसार सभी वस्तुएँ स्वतंत्र और स्थायी स्वभाव से रहित हैं तथा उनका अस्तित्व परस्पर कारणों और परिस्थितियों पर निर्भर है। इसलिए शून्यता का अर्थ पूर्ण अभाव नहीं, बल्कि स्वतंत्र स्वभाव का अभाव है। दूसरी ओर, योगाचार दर्शन का विकास असंग और वसुबन्धु जैसे आचार्यों द्वारा किया गया। इसे 'विज्ञानवाद' या 'विज्ञप्तिमात्रता' की परंपरा भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें अनुभव के निर्माण में चेतना की केंद्रीय भूमिका पर बल दिया गया है। योगाचार में आलयविज्ञान की अवधारणा के माध्यम से कर्म-संस्कारों और अनुभवों की निरंतरता को समझाया गया है। माध्यमिक जहाँ शून्यता और मध्यम मार्ग के माध्यम से आसक्ति का



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

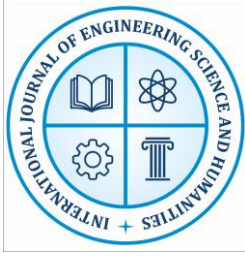
निराकरण करता है, वहीं योगाचार चेतना के रूपांतरण द्वारा ज्ञान और मुक्ति की प्राप्ति का मार्ग प्रस्तुत करता है।

वेदान्त दर्शन का उद्भव एवं विकास

वेदान्त दर्शन भारतीय दार्शनिक परंपरा की अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली विचारधारा है, जिसका मूल आधार वेदों के अंतिम भाग अर्थात् उपनिषदों में निहित है। 'वेदान्त' का शाब्दिक अर्थ 'वेदों का अंत' है, किंतु दार्शनिक दृष्टि से यह वेदों के अंतिम और सर्वोच्च ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है। वेदान्त दर्शन के प्रमुख आधारग्रंथ उपनिषद, भगवद्गीता और बादरायण द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से 'प्रस्थानत्रयी' कहा जाता है। उपनिषदों में ब्रह्म, आत्मा, जगत, ज्ञान और मोक्ष से संबंधित विचारों का व्यापक प्रतिपादन मिलता है। बादरायण ने ब्रह्मसूत्र के माध्यम से इन विचारों को व्यवस्थित दार्शनिक स्वरूप प्रदान किया। कालांतर में विभिन्न आचार्यों ने वेदान्त की अलग-अलग व्याख्याएँ प्रस्तुत कीं, जिससे अनेक प्रमुख संप्रदायों का विकास हुआ। आदि शंकराचार्य ने अद्वैत वेदान्त का प्रतिपादन करते हुए ब्रह्म को परम सत्य तथा आत्मा और ब्रह्म को अभिन्न माना। रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत में ब्रह्म की एकता के भीतर जीव और जगत की वास्तविक सत्ता स्वीकार की, जबकि मध्वाचार्य ने द्वैत वेदान्त के माध्यम से जीव और ब्रह्म के शाश्वत भेद पर बल दिया। इसके अतिरिक्त निम्बार्क के द्वैताद्वैत और वल्लभाचार्य के शुद्धाद्वैत जैसे मतों ने भी वेदान्त परंपरा को समृद्ध किया। वेदान्त दर्शन का केंद्रीय उद्देश्य आत्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर अज्ञान और सांसारिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त करना है। ज्ञान, भक्ति और आध्यात्मिक साधना के विभिन्न मार्गों के माध्यम से वेदान्त ने भारतीय धार्मिक और दार्शनिक चिंतन को व्यापक रूप से प्रभावित किया तथा आत्मा, ब्रह्म और मोक्ष के प्रश्नों की गहन व्याख्या प्रस्तुत की।

वेदान्त का स्वरूप एवं स्रोत

वेदान्त दर्शन का स्वरूप मुख्यतः आध्यात्मिक, तत्त्वमीमांसात्मक और मोक्षपरक है, जिसका केंद्रीय उद्देश्य परम सत्य के स्वरूप तथा आत्मा और ब्रह्म के संबंध की खोज करना है। वेदान्त के तीन प्रमुख आधारग्रंथ उपनिषद, भगवद्गीता और ब्रह्मसूत्र हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से 'प्रस्थानत्रयी' कहा जाता है। उपनिषद वेदान्त के श्रुति-प्रस्थान हैं, जिनमें ब्रह्म, आत्मा और परम सत्य का प्रतिपादन किया गया है। भगवद्गीता स्मृति-प्रस्थान के रूप में ज्ञान, कर्म और भक्ति के समन्वित मार्ग की व्याख्या करती है, जबकि बादरायण का ब्रह्मसूत्र न्याय-प्रस्थान के रूप में उपनिषदों की शिक्षाओं को तार्किक एवं व्यवस्थित आधार प्रदान करता है। वेदान्त में आत्मज्ञान को अज्ञान और संसार-बंधन से मुक्ति का प्रमुख साधन माना गया है। विभिन्न आचार्यों द्वारा इन मूल ग्रंथों की अलग-अलग व्याख्या किए जाने के कारण वेदान्त के अनेक संप्रदाय विकसित हुए। इस प्रकार वेदान्त का स्वरूप एक व्यापक दार्शनिक परंपरा के रूप में आत्मा, ब्रह्म, जगत और मोक्ष की व्याख्या प्रस्तुत करता है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

वेदान्त दर्शन का विकास

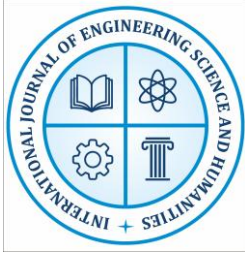
वेदान्त दर्शन का विकास उपनिषदों में व्यक्त ब्रह्म और आत्मा संबंधी विचारों से प्रारंभ होकर एक व्यवस्थित और बहुआयामी दार्शनिक परंपरा के रूप में हुआ। प्रारंभिक उपनिषदों में आत्मा, ब्रह्म, जगत और मोक्ष के विषय में विविध चिंतन मिलता है, जिसे बादरायण ने ब्रह्मसूत्र के माध्यम से सूत्रबद्ध किया। आगे चलकर गौड़पाद ने माण्डूक्यकारिका के माध्यम से अद्वैत चिंतन को दार्शनिक आधार प्रदान किया और आदि शंकराचार्य ने अद्वैत वेदान्त को व्यवस्थित स्वरूप दिया। इसके बाद रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत तथा मध्वाचार्य ने द्वैत सिद्धांत का प्रतिपादन किया। निम्बार्क ने द्वैताद्वैत और वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैत के माध्यम से वेदान्त की व्याख्या को नया आयाम प्रदान किया। इन संप्रदायों ने ब्रह्म, जीव और जगत के संबंध को अलग-अलग दृष्टिकोणों से समझाया। आधुनिक काल में स्वामी विवेकानन्द जैसे चिंतकों ने वेदान्त को व्यावहारिक और सार्वभौमिक स्वरूप प्रदान किया। इस प्रकार वेदान्त का विकास निरंतर व्याख्या, विमर्श और आध्यात्मिक साधना के माध्यम से होता रहा।

प्रमुख वेदान्ताचार्य

वेदान्त दर्शन के विकास में अनेक महान आचार्यों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आदि शंकराचार्य ने अद्वैत वेदान्त का व्यवस्थित प्रतिपादन करते हुए ब्रह्म को एकमात्र परम सत्य तथा आत्मा और ब्रह्म को मूलतः अभिन्न माना। रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत दर्शन के माध्यम से ब्रह्म की एकता स्वीकार करते हुए जीव और जगत को उसकी वास्तविक विशेषताओं के रूप में समझाया तथा भक्ति को मोक्ष का प्रमुख साधन माना। मध्वाचार्य ने द्वैत वेदान्त का प्रतिपादन करते हुए जीव और ईश्वर के बीच वास्तविक एवं शाश्वत भेद पर बल दिया। निम्बार्काचार्य ने द्वैताद्वैत सिद्धांत में जीव और ब्रह्म के बीच भेद तथा अभेद दोनों को स्वीकार किया, जबकि वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैत दर्शन में जगत को ब्रह्म की वास्तविक अभिव्यक्ति माना। इसके अतिरिक्त गौड़पाद ने प्रारंभिक अद्वैत चिंतन को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन वेदान्ताचार्यों की विविध व्याख्याओं ने वेदान्त को समृद्ध, बहुआयामी और प्रभावशाली दार्शनिक परंपरा के रूप में स्थापित किया।

वेदान्त दर्शन की प्रमुख शाखाएँ (अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैत)

वेदान्त दर्शन के विकास के क्रम में उपनिषदों, भगवद्गीता और ब्रह्मसूत्र की विभिन्न व्याख्याओं के आधार पर अनेक दार्शनिक शाखाओं का उदय हुआ, जिनमें अद्वैत, विशिष्टाद्वैत और द्वैत सर्वाधिक प्रमुख हैं। आदि शंकराचार्य द्वारा व्यवस्थित अद्वैत वेदान्त के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र परम और अंतिम सत्य है तथा जीवात्मा और ब्रह्म में वास्तविक रूप से कोई भेद नहीं है। 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः' की भावना इसके मूल दृष्टिकोण को व्यक्त करती है। अद्वैत के अनुसार अज्ञान या अविद्या के कारण मनुष्य स्वयं को ब्रह्म से भिन्न समझता है और संसार के बंधन में पड़ता है; आत्मज्ञान की प्राप्ति होने पर यह अज्ञान समाप्त हो जाता है तथा जीव अपने वास्तविक ब्रह्मस्वरूप को पहचानकर मोक्ष प्राप्त करता है। इसके विपरीत, रामानुजाचार्य द्वारा प्रतिपादित विशिष्टाद्वैत दर्शन ब्रह्म की एकता को स्वीकार करते हुए जीव और



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

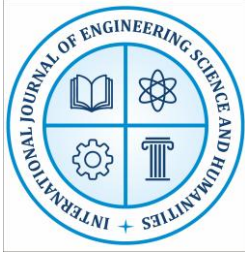
जगत की वास्तविक सत्ता को भी मान्यता देता है। इसके अनुसार ब्रह्म एक है, किंतु जीव और जगत उसके विशिष्ट रूप अथवा उसके शरीर के समान उससे अभिन्न रूप से संबंधित हैं। इस दर्शन में ईश्वर को सगुण, सर्वशक्तिमान और करुणामय माना गया है तथा भक्ति और ईश्वर की कृपा को मोक्ष का प्रमुख साधन स्वीकार किया गया है। मध्वाचार्य द्वारा प्रतिपादित द्वैत वेदान्त जीव और ब्रह्म के बीच वास्तविक तथा शाश्वत भेद को स्वीकार करता है। इसके अनुसार ईश्वर स्वतंत्र परम सत्ता है, जबकि जीव और जगत उस पर आश्रित हैं। मध्वाचार्य ने ईश्वर, जीव और जगत के पारस्परिक भेद को वास्तविक मानते हुए विष्णु को सर्वोच्च सत्ता के रूप में स्वीकार किया। द्वैत में भक्ति, ईश्वर के प्रति समर्पण और उसकी कृपा को मुक्ति का आधार माना गया है। इस प्रकार अद्वैत आत्मा और ब्रह्म की पूर्ण अभिन्नता, विशिष्टाद्वैत विशिष्ट एकता तथा द्वैत दोनों के वास्तविक भेद का प्रतिपादन करता है। इन मतभेदों के बावजूद तीनों शाखाओं का अंतिम उद्देश्य मनुष्य को सांसारिक बंधनों से मुक्त कर परम सत्य और मोक्ष की प्राप्ति की ओर अग्रसर करना है।

अद्वैत वेदान्त

अद्वैत वेदान्त भारतीय दर्शन की अत्यंत प्रभावशाली शाखा है, जिसे आदि शंकराचार्य ने व्यवस्थित दार्शनिक स्वरूप प्रदान किया। 'अद्वैत' का अर्थ है 'दो का अभाव', अर्थात् परम स्तर पर केवल एक ही सत्य सत्ता— ब्रह्म—का अस्तित्व है। अद्वैत के अनुसार ब्रह्म निर्गुण, निराकार, अनंत, नित्य और परम सत्य है तथा आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप में उसी ब्रह्म से अभिन्न है। जीव और ब्रह्म के बीच दिखाई देने वाला भेद अविद्या या अज्ञान के कारण उत्पन्न होता है। इसी अज्ञान के कारण मनुष्य शरीर, मन और अहंकार को अपना वास्तविक स्वरूप मानकर संसार, कर्म और पुनर्जन्म के बंधन में पड़ता है। अद्वैत में जगत को पूर्णतः असत्य नहीं, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर सत्य और पारमार्थिक स्तर पर मिथ्या माना जाता है। माया के कारण एक अद्वितीय ब्रह्म विविध नामों और रूपों वाले संसार के रूप में दिखाई देता है। आत्मज्ञान के माध्यम से जब अविद्या का नाश होता है, तब व्यक्ति आत्मा और ब्रह्म की एकता का प्रत्यक्ष बोध प्राप्त करता है। श्रवण, मनन और निदिध्यासन ज्ञान-प्राप्ति के प्रमुख साधन माने गए हैं। अद्वैत में मोक्ष किसी नवीन अवस्था की प्राप्ति नहीं, बल्कि अपने वास्तविक ब्रह्मस्वरूप की अनुभूति है। इस प्रकार अद्वैत वेदान्त ज्ञान को मुक्ति का प्रमुख साधन मानते हुए आत्मा की नित्य, शुद्ध और सार्वभौमिक सत्ता का प्रतिपादन करता है।

विशिष्टाद्वैत वेदान्त

विशिष्टाद्वैत वेदान्त के प्रमुख प्रवर्तक रामानुजाचार्य माने जाते हैं, जिन्होंने ब्रह्म की एकता के साथ जीव और जगत की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए वेदान्त की विशिष्ट व्याख्या प्रस्तुत की। 'विशिष्टाद्वैत' का अर्थ है विशेषताओं से युक्त अद्वैत, अर्थात् परम सत्ता एक ही है, किंतु वह जीव और जगत जैसी वास्तविक विशेषताओं से विशिष्ट है। रामानुज के अनुसार ब्रह्म सगुण, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और अनंत कल्याणकारी गुणों से संपन्न परमेश्वर है, जिसकी पहचान नारायण या विष्णु के रूप में की जाती है। जीव और जगत ब्रह्म



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

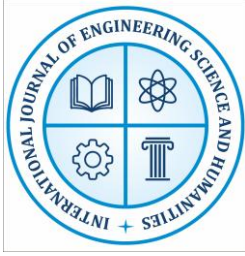
से पूर्णतः पृथक् भी नहीं हैं और उसके समान भी नहीं हैं, बल्कि वे ब्रह्म पर आश्रित होकर उसके शरीर के समान उससे अभिन्न रूप से संबंधित हैं। जीव एक वास्तविक, चेतन और नित्य सत्ता है, किंतु वह परमात्मा पर निर्भर है। संसार को भी मिथ्या न मानकर ब्रह्म की वास्तविक अभिव्यक्ति स्वीकार किया गया है। विशिष्टाद्वैत में केवल बौद्धिक ज्ञान को मोक्ष के लिए पर्याप्त नहीं माना जाता, बल्कि भक्ति, प्रपत्ति अर्थात् पूर्ण आत्मसमर्पण और ईश्वर की कृपा को विशेष महत्त्व दिया जाता है। मोक्ष की अवस्था में जीव अपनी व्यक्तिगत सत्ता बनाए रखते हुए परमात्मा के सान्निध्य और दिव्य आनंद को प्राप्त करता है। इस प्रकार विशिष्टाद्वैत ज्ञान, भक्ति और ईश्वर-कृपा का समन्वय करते हुए आत्मा और परमात्मा के संबंध की भक्तिपरक व्याख्या प्रस्तुत करता है।

द्वैत वेदान्त

द्वैत वेदान्त का व्यवस्थित प्रतिपादन मध्वाचार्य ने किया, जिन्होंने जीव और ब्रह्म के बीच वास्तविक, मूलभूत और शाश्वत भेद को स्वीकार किया। द्वैत दर्शन के अनुसार परमेश्वर, जीव और जगत् स्वतंत्र रूप से समान सत्ता नहीं रखते; इनमें केवल परमेश्वर पूर्णतः स्वतंत्र है, जबकि जीव और जगत् उसकी सत्ता पर आश्रित हैं। मध्वाचार्य ने विष्णु को सर्वोच्च परम सत्ता माना, जो सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और समस्त जगत् का नियंता है। जीव चेतन और वास्तविक सत्ता है, परंतु वह कभी भी परमात्मा के समान या उससे अभिन्न नहीं हो सकता। इसी प्रकार जगत् भी मिथ्या या भ्रम नहीं, बल्कि वास्तविक है। द्वैत दर्शन में पाँच प्रकार के शाश्वत भेदों की अवधारणा को विशेष महत्त्व प्राप्त है—ईश्वर और जीव, ईश्वर और जड़ जगत्, एक जीव और दूसरे जीव, जीव और जड़ पदार्थ तथा एक जड़ पदार्थ और दूसरे जड़ पदार्थ के बीच भेद। इसे 'पंचभेद' सिद्धान्त कहा जाता है। द्वैत में सत्य ज्ञान का अर्थ जीव की परमेश्वर पर निर्भरता और दोनों के वास्तविक भेद को समझना है। भक्ति, धार्मिक आचरण और ईश्वर की कृपा को मोक्ष का प्रमुख साधन माना गया है। मोक्ष प्राप्त होने पर भी जीव अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए रखता है और ईश्वर के सान्निध्य में आनंद का अनुभव करता है। इस प्रकार द्वैत वेदान्त ईश्वर की सर्वोच्चता, जीव की व्यक्तिगत सत्ता और जगत् की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए भक्ति-आधारित मुक्ति की अवधारणा प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

भारतीय दर्शन की परम्परा मानव जीवन के आध्यात्मिक, नैतिक एवं बौद्धिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार रही है। इस परम्परा में बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन दो ऐसे प्रमुख दार्शनिक प्रवाह हैं, जिन्होंने जीवन, जगत्, आत्मा, सत्य तथा मोक्ष के संबंध में गहन एवं तर्कपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। प्रस्तुत अध्ययन के सैद्धान्तिक एवं साहित्यिक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि बौद्ध दर्शन जहाँ अनित्य, अनात्म, प्रतीत्यसमुत्पाद तथा मध्यम मार्ग के सिद्धान्तों के माध्यम से दुःखों से मुक्ति एवं निर्वाण की अवधारणा प्रस्तुत करता है, वहीं वेदान्त दर्शन ब्रह्म, आत्मा एवं अद्वैत के सिद्धान्तों के आधार पर आत्मसाक्षात्कार तथा मोक्ष को मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मानता है। दोनों दर्शनों के दार्शनिक दृष्टिकोणों में वैचारिक भिन्नताएँ होने के बावजूद उनका मूल उद्देश्य मानव कल्याण, नैतिक आचरण, आत्मानुशासन, करुणा तथा ज्ञान की स्थापना है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

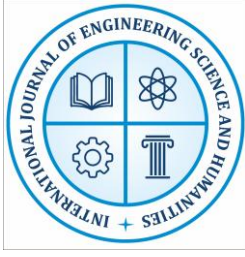
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

साहित्य समीक्षा से यह भी स्पष्ट होता है कि भारतीय दर्शन की इन दोनों परम्पराओं ने न केवल भारतीय संस्कृति, धर्म एवं शिक्षा को प्रभावित किया है, बल्कि एशिया तथा विश्व के अनेक देशों के दार्शनिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चिंतन पर भी गहरा प्रभाव डाला है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ मानव समाज नैतिक संकट, मानसिक तनाव, सामाजिक असमानता, हिंसा तथा पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहा है, वहाँ बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन की शिक्षाएँ अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होती हैं। बौद्ध दर्शन की करुणा, अहिंसा एवं मध्यम मार्ग की अवधारणा तथा वेदान्त दर्शन की आत्मिक एकता, सार्वभौमिक बंधुत्व एवं आध्यात्मिक चेतना आधुनिक समाज को संतुलित एवं मानवीय दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। इसलिए आवश्यक है कि इन दोनों दार्शनिक परम्पराओं का अध्ययन केवल ऐतिहासिक अथवा धार्मिक संदर्भ तक सीमित न रहकर समकालीन शिक्षा, नैतिक दर्शन, मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा वैश्विक शांति के विमर्श में भी किया जाए। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय दर्शन की परम्परा में बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन परस्पर पूरक ज्ञान-परम्पराएँ हैं, जिनका सैद्धान्तिक एवं साहित्यिक अध्ययन भारतीय ज्ञान-परम्परा की व्यापकता, बौद्धिक समृद्धि तथा समकालीन उपयोगिता को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इनके सिद्धान्त आज भी मानव जीवन में नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक उन्नयन, सामाजिक समरसता तथा विश्व-शांति की स्थापना हेतु प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

संदर्भ

1. अल्बहारी, एम. (2019). पेरेनियल आइडियलिज़्म: अ मिस्टिकल सॉल्यूशन टु द माइंड-बॉडी प्रॉब्लम. फिलॉसफ़र्स इम्प्रिन्ट, 19(44), 1–37.
2. एलन, एम. एस. (2022). द ओशन ऑफ़ इन्कायरी: निश्चलदास एण्ड द प्रीमॉडर्न ओरिजिन्स ऑफ़ मॉडर्न हिन्दुइज़्म. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
3. गणेरी, जे. (2017). अटेंशन, नॉट सेल्फ़. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. गारफील्ड, जे. एल. (2022). बुद्धिस्ट एथिक्स: अ फिलॉसफिकल एक्सप्लोरेशन. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. चड्ढा, एम. (2023). सेल्फलेस माइंड्स: अ कन्टेम्पररी पर्सपेक्टिव ऑन वसुबन्धुज़ मेटाफिजिक्स. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
6. टुस्के, जे. (सम्पा.). (2017). इंडियन एपिस्टेमोलॉजी एण्ड मेटाफिजिक्स. ब्लूम्सबरी एकेडमिक.
7. थॉम्पसन, ई. (2020). व्हाई आई एम नॉट अ बुद्धिस्ट. येल यूनिवर्सिटी प्रेस.
8. पेरेट, आर. डब्ल्यू. (2016). एन इंट्रोडक्शन टु इंडियन फिलॉसफी. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
9. फ्रेज़ियर, जे. (2017). हिन्दू वर्ल्डव्यूज़: थ्योरीज़ ऑफ़ सेल्फ़, रिचुअल एण्ड रियलिटी. ब्लूम्सबरी एकेडमिक.
10. बर्ली, एम. (2016). रीबर्थ एण्ड द स्ट्रीम ऑफ़ लाइफ़: अ फिलॉसफिकल स्टडी ऑफ़ रीइनकार्नेशन, कर्मा एण्ड एथिक्स. ब्लूम्सबरी एकेडमिक.



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

11. बिलिमोरिया, पी. (सम्पा.). (2018). हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी. राउटलेज.
12. मडायो, जे. (2017). रीथिंकिंग नियो-वेदान्त: स्वामी विवेकानन्द एण्ड द सेलेक्टिव हिस्टोरियोग्राफी ऑफ अद्वैत वेदान्त. रिलीजन्स, 8(6), 101.
13. महाराज, ए. (2018). इनफिनिट पाथ्स टु इनफिनिट रियलिटी: श्रीरामकृष्ण एण्ड क्रॉस-कल्चरल फिलॉसफी ऑफ रिलीजन. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
14. महाराज, ए. (सम्पा.). (2020). द ब्लूम्सबरी रिसर्च हैंडबुक ऑफ वेदान्त. ब्लूम्सबरी एकेडमिक.
15. राम-प्रसाद, सी. (2018). ह्यूमन बीइंग, बॉडिली बीइंग: फिनोमिनोलॉजी फ्रॉम क्लासिकल इंडिया. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
16. रेपेटी, आर. (सम्पा.). (2016). बुद्धिस्ट पर्सपेक्टिव्स ऑन फ्री विल: एजेंटलेस एजेंसी? राउटलेज.